ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 225-227
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

निराला की कहानियों में सामाजिक स्वातन्त्र्य संघर्ष

डॉ0 फूलबदन सिंह
एसो0 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष– हिन्दी विभाग, कुवर सिंह पी0 जी0 कालेज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 10.11.2018, Revised- 16.11.2018, Accepted - 19.11.2018 E-mail: alkatiwari151@gmail.com

सारांश : ***निराला प्रत्येक मानवीय इकाई के सामाजिक समरसता प्राप्त करने की स्थिति को ही वास्तविक स्वतंत्रता मानते हैं हमारे देश में सामाजिक समरसता का अपेक्षाकृत अभाव है। इसी सामाजिक समरसता को प्राप्त करने के लिए निराला सामाजिक स्वातन्त्र्य संघर्ष को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। निराला ने भारतीय समाज के विभिन्न रूपों का दृश्य अपनी 'देवी' शीर्षक नामक कहानी में बड़ी सजीवता से दिखलाया है। इस कहानी में निराला ने समस्या का कोई समाधान प्रस्तुत नहीं किया है बल्कि पगली रूपी दर्पण में समाज के सभी वर्गों के लोगों का प्रतिबिंब यथार्थ रूप से सबके सामने रख दिया है। निराला ने इस कहानी में आत्मचरित्र कथन भी किया है। इसमें निराला ने साहित्य के क्षेत्र में अपने संघर्षों के साथ–साथ अपनी आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है। निराला लिखते हैं–" मुझे बराबर पेट के लाले रहे। पर फाके मस्ती में भी मैं परियों के ख्वाब देखता रहा – इस तरह अपनी तरफ से मैं जितना लोगों को ऊंचा उठाने की कोशिश करता गया, लोग उतना मुझे उतारने पर तुले रहे और चूँकि मैं साहित्य को नरक से स्वर्ग बना रहा था, इसीलिए मेरी दुनिया भी मुझसे दूर होती गई।***

कुंजीभूत शब्द– कला संस्कृति, भारतीय संस्कृति, प्रमाण, भारतीय कला, साहित्य गौकला, असाधारण ।

निराला के उक्त कथ्यों से उनके जैसे व्यक्तित्व की सामाजिक स्थिति का आकलन सहज किया जा सकता है निराला एक होटल में ठहरे हुए थे। होटल के सामने रास्ते के किनारे पर बैठी हुई एक स्त्री पर निराला की नजर पड़ी ।वे लिखते हैं "प्रकृति की मारों से लड़ती हुई मुरझाकर, मुमकिन है किसी को पच्चीस साल से कुछ ज्यादा जेंजे, पास एक लड़का डेढ़ साल का खेलता हुआ, संसार की स्त्रियों की एक भी भासना नहीं, उसे देखते ही मेरे बड़प्पन वाले भाव उसी में समा गए, और फिर वही छुटपन सवार हो गया मैं उसी की चिंता करने लगाया दृयह कौन है हिंदू या मुसलमान? इसके एक बच्चा भी है। पर इन दोनों का भविष्य क्या होगा ? बच्चे की शिक्षा परवरिश क्या इसी तरह रास्ते पर होगी। यह क्या सोचती होगी ईश्वर, संसार, धर्म और मनुष्यता के संबंध में ?

निराला ने होटल के नौकर संगमलाल को बुलाकर उस स्त्री के बिषय मै पूछा। संगमलाल ने बताया दृ"वह तो पागल है और गूंगी भी है, आप लोगों की थालियों से बची रोटियां उसे दे दी जाती हैं निराला सामाजिक सुधार करने वाले ठेकेदारों और सामाजिक संतुलन की वकालत करने वाले ढोंगीयों पर करारा व्यंग करते हुए लिखते हैं दृ "देश में शुल्क लेकर शिक्षा देने वाले बड़े–बड़े विश्वविद्यालय हैं। पर इस बच्चे का क्या होगा ? इसके भी मां है। वह देश की सहानभूति का कितना अंश पाती है – हमारी थाली की बची रोटियां, जो कल तक कुत्तों को दी जाती थी। यही सही हमारी सच्ची दिशा का चित्र है। वह मां अपने बच्चों को लेकर राह पर बैठी हुई धर्म, विज्ञान, राजनीति, समाज जिस विषय को भी मनुष्य होकर आज तक अपनाया है, उसी की रूचि वाले पथिक को शिक्षा दे रही है – पर कुछ कहकर नहीं कितने आदमी समझते हैं ? यही न समझना संसार है –बार– बार यही कहती है। उसकी आत्मा से यही ध्वनि निकलती है – संसार में उसे जगह नहीं दी– उसे नहीं समझा, पर संसारियों की तरह वह भी है उसका भी बच्चा है ।

निराला पुनः लिखते हैं– "एक रोज मैंने देखा नेता का जुलूस उसी रास्ते से जा रहा था। हजारों आदमी इकठठे थे। जय– जयकार से आकाश गूंज रहा था। मैं उसी बरामदे पर खड़ा स्वागत देख रहा था पगली भी उठ कर खड़ी हो गई थी। बड़े आश्चर्य से लोगों को देख रही थी रास्ते पर इतनी बड़ी भीड़ उसने नहीं देखी। मुंह फैला कर भोंहे सिकोडकर ,आंखों की पूरी ताकत से देख रही थी । समझना चाहती थी वह क्या था। क्या समझी आप समझते हैं? भीड़ में उसका बच्चा कुचल गया और रो उठा। पगली बच्चे की गर्द झाड़ कर चुमकारने लगी । और फिर कैसी ज्वालामई दृष्टि से जनता को देखा। मैं यही समझता हूँ। नेता दस हजार की थैली लेकर गरीबों के उपकार के लिए चले गए– जरूरी – जरूरी कामों में खर्च करेंगे।

निराला ने उपरोक्त अंतिम पंक्तियों में देश के नेता वर्ग की वास्तविक स्थिति का चित्रण कर दिया है। गरीबों के नेता है। पैसे ले जाकर गरीबों पर खर्च करेंगे। किंतु सामने एक स्त्री व उसका डेढ़ वर्ष का बच्चा उन्हें दिखाई नहीं देता

है। नेताजी के जलूस से हाथ दब जाने पर बच्चे की रोने की आवाज नेता जी को नहीं सुनाई पड़ती है। नेता तो नेता, नेता जी के जुलूस में इतने आदमी थे किसी की भी नजर उस स्त्री पर नहीं पढ़ी या पड़ी भी तो देख कर अनदेखा कर दिया गया हो। सबकी मनुष्यता मर गई है। हम किस स्वतंत्रता की बात करते हैं। हमें अंग्रेजों से स्वतंत्रता तो मिल जाएगी किंतु यदि हमारी मनुष्यता मर गई तो हमें पुनः गुलाम बनने में देर नहीं लगेगी। हमें अपने अंदर की मनुष्यता को जीवित रखना पड़ेगा।

नेता वर्ग के पश्चात निराला ने धार्मिक लोगों का यथार्थ प्रस्तुत किया है। पगली स्त्री सड़क के किनारे जहां रहती थी वहीं पास में रामायण की कथा हो रही थी। लोग कथा समाप्त होने के पश्चात अपने – अपने घर के लिए चले। निराला लिखते हैं " पाठ सुनकर मंजकर भक्त मंडली चली। दुबली – पतली ऐश्वर्य – श्री से रहित पगली बच्चे के साथ बैठी हुई मिली। एक ने कहा इसी संसार में स्वर्ग और नरक देख लो। दूसरे ने कहा कर्म के दंड है। तीसरा बोला सकल पदारथ है। जग माही कर्म – हीन नर पावत ना ही। सब लोग पगली को देखते शास्त्रार्थ करते चले गए।

ये सारे लोग धार्मिक प्रवृत्ति के लोग हैं। रामायण की कथा सुनकर आ रहे हैं। ये वही रामायण की कथा है, जहां एक राजा एक नाविक को गले से लगाता है। वही राजा शबरी के जूठे बेर खाता है। किंतु यहां पर उस पगली स्त्री को गले लगाने वाला कोई नहीं है। केवल उसके बारे में निरर्थक बातें करते हुए लोग अपने घरों को चले गए। धार्मिक लोगों के पश्चात निराला समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के विषय में भी लिखते हैं " मैंने हिंदू, मुसलमान, बड़े – बड़े पदाधिकारी, राजा रईस सबको उस रास्ते में जाते समय पगली को देखते हुए देखा। जिन्हें अपने को देखने दिखाने की आदत पड़ गई है, उनकी दृष्टि में दूसरे की सिर्फ तस्वीर आती है, भाव नहीं. यह दर्शन मुझे मालूम था।

नेता धार्मिक प्रवृत्ति के लोग, प्रबुद्ध वर्ग के लोग, सभी वर्गों के लोग सबको निराला ने उस पागल स्त्री के समक्ष खड़ा खड़ा करके सब की वास्तविकता सामने लाकर समाज को मनुष्यता का आइना दिखाया।

डॉ रामविलास शर्मा लिखते हैं दृ "देवी का व्यंग इतना प्रभावपूर्ण इसलिए है कि उसका लक्ष्य व्यक्ति विशेष नहीं है, वरन् वह सामाजिक व्यवस्था है जिसमें मुफ्त खोर पूजे जाते हैं, और जिन्हें पूजना चाहिए वे ठोकरें खाते हैं । यहां पर निराला जी ने भारतीयता के नाम पर जो अन्याय लीला होती है । उसकी हकीकत बयान कर दी है ।

निराला ने अपनी एक अन्य कहानी 'हिनी' में उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर किए जाने वाले शोषण एवं अत्याचार को दिखाया है । हिरनी सिंहपुर के रानी की दासी है हिरनी बहुत तेज और बुद्धिमान है इसी कारण रानी अन्य दासियों की तुलना में हिरनी को ज्यादा मानती थी । रानी द्वारा हिरनी को ज्यादे मानने के कारण अन्य दासिया हिरनी से जलती थी । एक दिन हिरनी की लड़की की तबीयत खराब हो जाने के कारण हिरनी राज महल में नहीं आई । मौका अच्छा देखकर एक अन्य दासी श्यामा और स्याही ने रानी से कहा दृ "सरकार को हिरनी ने आज फिर धोखा दिया य मैं गई थी, उसकी लड़की को जुड़ी– बुखार कहीं कुछ भी नहीं।

जबकि लड़की के बीमार होने के कारण हिरनी दो दिन की छुट्टी लेकर गई थी। रानी साहिबा ने चापलूस दासी की बात को सुनकर हिरनी को तुरंत पकड़ कर ले आने का आदेश दिया। दासी एक अन्य नौकर बूटा सिंह से बोली दृ "सरकार कहती है हिरनी का झोटा पकड़कर ले आओ, अभी ले आओ बहुत जल्द।

बूटा सिंह जब हिरनी के घर पहुंचता है तो हिरनी वैधजी की दवा दूध में घोल रही थी। हिरनी द्वारा लड़की को दवा पिलाकर चलने के लिए कहने पर बूटा सिंह हिरनी को घसीटते हुए कहता है "लौटकर दवा पिला चाहे जहर, सरकार ने इसी वक्त बुलाया है।

हिरनी जब रानी साहिबा के सम्मुख पहुंचती है तब निराला लिखते हैं दृ "रानी साहिबा क्रोध से कांपने लगी। दूसरी दासियों को पकड़ लाने के लिए भेजा। इच्छा थी उसका सर दबा कर स्वय प्रहार करें। दासियां पकड़ कर ले चली, तो रानी साहिबा को आंसुओं से देखती हुई, उसी अनिन्ध हिंदी में हिरनी छमा प्रार्थना करती हुई बोली, सरकार मेरा कसूर नहीं है। पर कौन सुनता है, उससे रानी साहिबा की सेवा में कसर रह गई है । जब पास पहुंची, उसको झुका कर मारने के लिए रानी साहिबा ने घूँसा बांधा । हिरनी के मुख से निकला,' हे राम जी!' रानी साहिबा की नाक से खून की धारा बह चली निराला की इस कहानी के माध्यम से यह संदेश दे रहे हैं कि गरीबों की हाय कभी नहीं लेनी चाहिए । गरीबों की हाय जब लगती है तो वह सब कुछ खत्म कर देती है । चाहे सामने वाला राजा ही क्यों न हो ।

निराला ने अपनी कहानी 'परिवर्तन' में भी यह दिखाया है कि राजा महेश्वर सिंह और उनकी पुत्री परी कैसे गरीब शत्रुघ्न सिंह से और उसके पुत्र सूरज का शोषण करते हैं। परी सदैव सूरज को नीचा दिखाने का उद्यम करती रहती है। इसी कारण सूरज परी से मिलना नहीं चाहता है। "सूरज इस समय मिडिल क्लास का विद्यार्थी है। परी के स्नेह – लेश रहित तेज स्वभाव के कारण हुआ उसे नहीं मिलता। परी से वह ऊँचे दर्जे में ज्यादा पढ़ा हुआ है इसका विचार परी नहीं करती, जो काम उससे करवाती है उसके कारण वह लाज

से मुरझा जाता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह एक व्यवस्थित खुशहाल जीवन व्यतीत कर सके इसलिए सामाजिक संरचना को कई आयामों द्वारा सुसज्जित किया गया पर बड़ी विडंबना है कि व्यक्तिगत निहितार्थ को तुष्ट करने के लिए मनुष्य ही मनुष्य का पाशविक शोषण करने में भी तनिक संकोच नहीं करता। अपने – अपने जीवन प्रवाह के मदांध में बहते मानव के पास जहां इस विचारणीय प्रश्न के लिए अवकाश ही नहीं, निराला की संवेदना उसे आत्मसात करती हुई उनके अंतर्मन को व्यथित करती है। निराला अपने उपन्यासों व कहानियों और उनके पात्रों के माध्यम से न सिर्फ इन प्रश्नों की पड़ताल करते हैं। वरन मानव और उसकी सामाजिक व्यवस्थाओं के बीच मनुष्य के सामाजिक बनने हेतु सामाजिक स्वातंर्त्य संघर्ष करते हैं। निराला के उपन्यास इसके साक्ष्य हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नन्द किशोर नवल–निराला रचनावली 3 –पृष्ठ 25
2. नन्द किशोर नवल –निराला रचनावली 3 –पृष्ठ 31
3. नन्द किशोर नवल– निराला रचनावली 3 –पृष्ठ 31
4. नन्द किशोर नवल–निराला रचनावली 3 – पृष्ठ 31
5. विवेक निराला– निराला साहित्य में प्रतिरोध के स्वर – पृष्ठ 307
6. विवेक निराला – निराला साहित्य में प्रतिरोध के स्वर – पृष्ठ 307
7. नन्द किशोर नवल–निराला रचनावली 3 –पृष्ठ 10
8. गया प्रसाद गुप्त – निराला के गध्य साहित्य मै प्रगतिशील चेतना – पृष्ठ 58
9. नन्द किशोर नवल – निराला रचनावली 3 –पृष्ठ 147
10. विवेक निराला – निराला साहित्य में प्रतिरोध के स्वर – पृष्ठ 310
11. विवेक निराला – निराला साहित्य में प्रतिरोध के स्वर – पृष्ठ 311
12. नन्द किशोर नवल – निराला रचनावली 3 – पृष्ठ 256–57
13. नन्द किशोर नवल – निराला रचनावली 3 – पृष्ठ 352

*****